e-ISSN:2582-7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 6, Issue 3, March 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.54

International Journal Of Multidisciplinary Research In Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 3, March 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0603005 |

जयशंकर प्रसाद के नाटक चंद्रगुप्त में नारी पात्रों में अन्तर्द्वन्द्व

डॉक्टर संगीता शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
दयानंद पीजी कॉलेज हिसार

मूल शब्द : अन्तर्द्वन्द्व, पुरुष की निर्जीव कठपुतली , प्रतिशोध भावना, जुड़ता हुआ घायल हृदय ,प्रणय की प्रेम पीड़ा ,असह्य आघात, कमनीय कुसुम, कलुषित कामना, स्वयं प्रभा समुज्ज्वला।

जयशंकर प्रसाद ने अपने नाटको में नारी पात्रों को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान क्रिया है। प्रसाद के ये नारी पात्र कहीं भी पुरुष की निर्जीव कठपुतली मात्र नहीं है। चन्द्रगुप्त नाटक में सुवासिनी, कार्नेलिया, अलका, कल्याणी और मालविका में अन्तर्द्वन्द्र के विभिन्न रूपों को झलक दिखाई देती है।

कल्याणी नाटक को सर्वाधिक दुर्भाग्यशालिनी पात्रा है। कल्याणी मगध की राजकुमारी है। नाटक में उसके हृदय में तीन भावनाएं काम करती है। चन्द्रगुप्त के प्रति आकर्षण, पर्वतेश्वर के प्रति प्रतिशोध भावना और पिता के प्रति अटूट प्रेम। पर्वतेश्वर को नीचा दिखाने के लिए पराजय के समय सहायता पहुंचाने का उद्देश्य लेकर वह सिकन्दर-पर्वतेश्वर युद्ध में सम्मिलित होती है। परन्तु उसे सफलता नहीं मिलती। कल्याणी का चन्द्रगुप्त के प्रति आकर्षण उसके तक्षशिला से लौटने पर सरस्वती मन्दिर के उपवन में पहली बार व्यक्त हुआ है। दृष्ट पर्वतेश्वर का वध करते हुए पिता के विरोधी के प्रेम को कुचलना और प्रेम को प्यास में तड़पकर मर जाना कल्याणी के हृदय का मर्मस्पर्शी अन्तर्द्वन्द्व है:-

"परंतु तुम मेरे पिता के विरोधी हुए, इसलिए इस प्रणय को प्रेम पीड़ा को मैं पैरों से कुचलकर दबा कर खड़ी रही। अब मेरे लिए कुछ भी अवशिष्ट नहीं रहा।"१

जब पर्वतेश्वर कल्याणी को अपनी प्रियतमा बनाकर सुखी बनाने का वचन देता है। तब कल्याणी कहती है-मैं अब सुख नहीं चाहती। सुख अच्छा है या दुःख मैं स्थिर न कर सकी।। तुम मुझे कष्ट न दो। इस पर वह पर्वतश्वर से दूर भाग जाना चाहती है। पर्वतेश्वर उसे पकड़ने की कोशिश करता है तो वे उसी का छुरा निकालकर उसका वध कर देती है और स्वयं भी आत्महत्या करने को उद्धत होती है और चन्द्रगुप्त के पास आने पर आत्महत्या कर लेती है। इस प्रकार कल्याणी में एक और तो अपने पिता के विरोधों के प्रति प्रेम भावना और दूसरी ओर अपने पिता के प्रति प्रेम जिसे व अंतिम समय में कहती है-'पिता लो मैं भी आती हूँ।' के द्वारा उसके अन्तर्द्वन्द्व को परिणति होती है।

नाटक के चतुर्थ अंक में मगध राजकुमारी कल्याणी के सहज अंतर्द्वंद्व का भी एक उदाहरण है, उसने किशोरावस्था में जिस चंद्रगुप्त से प्रेम किया था ,उसी का विरोध करते हुए जब वह उसे देखती हैं उसे मार्मिक पीड़ा की अनुभूति होती है यह अपने को हृदय को न

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 3, March 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0603005 |

चंद्रगुप्त से प्रेम करने से विरत कर पाती है और न ही चन्द्रगुप्त को पिता का विरोध करने से रोक पाती है। अन्त में जब चंद्रगुप्त की ही उपस्थिती में कल्याणी के पिता नन्द का वध राजसभा में होता है, तब यह असह्य उससे सहन नहीं होता और वह यह सोचती हैं:-

"मेरे जीवन के दो स्वप्न थे.....दुर्दिन के बाद आकाश के नक्षत्र विलास सी चन्द्रगुप्त की छवि और पर्वतश्वर से प्रतिशोध, किन्तु मंगध की राजकुमारी आज अपने हो उपवन में बंदिनी है। मैं वही तो हूँ... जिसके संकेत पर मगध का साम्राज्य चल सकता था। वही शरीर है, वही रूप है, वही हृदय है, पर छिन गया अधिकार और मनुष्य का मानदण्ड ऐश्वर्य।"२

कल्याणी के ये शब्द ऐसे कटु सत्य पर आधारित हैं कि उनका विरोध करने को कोई विरोधी भाव सामने नहीं आता और इसी एक भाव की स्थिति में वह आगे सोचती है –'मगध की राज मंदिर में उसी तरह खड़े है: गंगा शोण से उसी स्नेह से मिल रही है। नगर का कोलाहल पूर्ववत् है। पर न रहेगा एक नंद वंश ।' यहाँ तक कल्याणी के अन्तर्जगत में एक ही भाव प्रमुख रहता है और इसी प्रेरणा अन्त में वह निश्चय कर लेती है। जब नन्द वंश का कोई न रहा तब एक राजकुमारी बच कर क्या करेगी?

सुवासिनी शकटार की कन्या तथा कुसुमपुर का एक कमनीय कुसुम है। उसके कंठ में अद्भुत माधुर्य है और रूप में वह अभिनेत्री एवं नर्तकी है। जब वह वसन्तोत्सव की रानी बनती है तो नन्द एक ही झलक से उसे अभिनयशाला की रानी बना देता है। सुवासिनी के मन से राक्षस के प्रति प्रेम है। वह नन्द के समक्ष अपने को एक वेतन पाने वाली अभिनेत्री कह कर नन्द की कलुषित कामना को अस्वीकार कर देती है। नन्द धमकी देता है कि राक्षस इस पृथ्वी पर तुम्हारा प्रेमी होकर जीवित नहीं रह सकता तब वह जवाब देती है कि मैं उसे ढूंढने के लिए स्वर्ग

में भी जाऊँगी। एक अन्य स्थल पर सुवासिनी के मन में चाणक्य और राक्षस को लेकर अन्तर्द्वन्द्वग्रस्तता है। राक्षस को समर्पण करने के बाद उसको अपने बाल सखा चाणक्य की याद आती है। वह राक्षस से भी कहती है-

"राक्षस तुम वासना से उत्तेजित हो, तुम नहीं देख रहे हो कि सामने एक जुड़ता हुआ घायल हृदय बिछुड़ जाएगा. एक पवित्र कल्पना सहज ही नष्ट हो जाएगी।"३

इससे जान पड़ता है कि किशोरावस्था में सुवासिनी का चाणक्य से घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। संभवत: इसकी ओर आकृष्ट भी हो चुकी थी परन्तु बौद्ध स्तूप की पूजा से लौटते समय उसके व्यंग्य:-

"वेश्याओं के लिए भी एक धर्म की आवश्यकता थी, चलो अच्छा ही हुआ।" ....इससे चाणक्य को पहचान कर वह अपने प्रेमी अमात्य राक्षस से इस अन्याय के प्रतिकार के लिए हठ करती है और यह वचन 'आज से मेरे कारण तुमको राजचक्र में बौद्ध मत का समर्थन करना होगा।"

वह राक्षस से कहती है :-

"उस ब्राह्मण को दण्ड दिये बिना सुवासिनी जी नहीं सकती अमात्य, तुमको करना होगा। में बौद्ध स्तूप की पूजा करके आ रही थी. उसने व्यंग्य किया और वह बड़ा कठोर था राक्षस । उसने कहा- "वेश्याओं के लिए भी एक धर्म की आवश्यकता थी चलो अच्छा ही हुआ। ऐसे धर्म के अनुकूल पतितों की भी कमी नहीं।"४

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 3, March 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0603005 |

अन्ततः कह सकते है कि सुवासिनी का अन्तर्द्वन्द्व मुख्यतः उसके रूप सौंदर्य के आकर्षण पर नन्द का मुग्ध हो जाना, चाणक्य का बाल सखा होना एवं प्रथम आकर्षण, राक्षस के रूप पर आकर्षित सुवासिनी और उसके पिता शकटार द्वारा उसके चरित्र पर दोष लगाने आदि घटनाओं को लेकर ही उपलब्ध होता है। जिसको प्रसाद ने अपनी सुन्दर लेखनी के द्वारा सुसज्जित किया है। गांधार की राजकुमारी अलका तक्षशिला के गुरुकुल में चन्द्रगुप्त और सिंहरण की बातों से प्रभावित होती है। उन लोगों की बातों को अपने अन्तर्वृत के अनुकूल पाकर उसमें रम जाती है। देशभक्ति की धुन उसमें समा जाती है। प्रथम अन्तर्द्वन्द्व के दर्शन अलका में हमें उस समय होते हैं जब उसके पिता गांधार- नरेश और भाई आम्भीक को देशद्रोह में हाथ बंटाते देखती है तो उसका हृदय विद्रोह कर उठता है :-

"यदि वह बन्दिनी नहीं बनाकर रखी जाएगी तो सारे गांधार में वह विद्रोह मचा देगी" और वह राजसुखों की ठोकर मारकर अकेली निकल खड़ी होती है।

उसके मन में भावना व्याप्त है:

“मेरा देश है, मेरे पहाड़ है, मेरी नदियाँ है, और मेरे जंगल है। इस भूमि के एक-एक परमाणु मेरे है और मेरे शरीर के एक-एक क्षुद्र अंश उन्हीं परमाणुओं से बने हैं। फिर मैं कहाँ जाऊँगी यवन। “५

इसीलिए यवनों के हाथ स्वाधीनता बेचकर उनके दान से जीने की शक्ति उसमें नहीं है। चाणक्य के कार्य में विदेशियों के प्रति असहनशीलता और नन्द के प्रति व्यक्तिगत प्रतिशोध काम करता दिखाई देता है। परन्तु अलका में विशुद्ध देश प्रेम की भावना ओतप्रोत है। युद्ध भूमि में बन्दी बनाए जाने पर देशोद्धार के लिए वह पर्वतेश्वर के राजमहलों में जाना स्वीकार करती है:-

"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से

प्रबुद्ध शुद्ध भारती

स्वयं प्रभा समुज्जवला

स्वतंत्रता पुकारती

अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ प्रतिज्ञ सोच लो प्रशस्त पुण्य पथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।“

अलका एक ओर तो देशप्रेम से ओतप्रोत होकर विद्रोह का बीड़ा उठाती है। दूसरी ओर उसके हृदय के कोने में प्रेम की कोमल भावना का उद्भूत होना और वह भी देश प्रेमी सिंहरण के लिए उसके भाई आंभीक के क्षुब्ध होने के पश्चात् अलका सिंहरण से गांधार छोड़ने का अनुरोध करती हैं और कहती है:-

“मेरा देश मालव ही नहीं गांधार भी है।

यही क्यों समग्र आर्यवर्त है”।६

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 3, March 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0603005 |

तब अलका के हृदय का तार भी इस मृदु आघात से झनझना ना उठता है। इस आघात को शांत करने के लिए वह कहती हैं - मैं भी आर्यावर्त की बालिका हूं ।सिंहरण के प्रति अलका के आकर्षण का आभास नाटक के आरंभ में ही मिल जाता है। लेकिन वह उस प्रेम को कभी भी प्रकट नहीं करती और और 'अन्य निर्झर के स्वच्छ हृदय' वाले सिंहरण को अपना कोमल हृदय प्रदान करके पागल -सी बनी रहती है। इस प्रकार उसका अंतर्द्वंद्व ग्रस्त हृदय उसी समय फूट पड़ता है। जब वह संगठन के साथ पद पर्वत ईश्वर की बंदी गृह में होती है अपना प्रदान कर रही है। इस प्रकार उस अन्तइन्द्रस्त हृदय उसी समय फूट पड़ा है। जब वह सिंहरण के साथ पर्वतेश्वर के बंदी गृह में होती है :-

"सुंदर निश्चल हृदय ,तुमसे हंसी करना भी अन्याय है। परंतु व्यथा को दबाना पड़ेगा। सिंहरण को मालव भेजने के लिए प्रणय के साथ अत्याचार करना होगा। "७

इसके साथ ही वह अपने मन को बहलाने के लिए गाने लगती है :-

प्रथम यौवन मदिरा से मत्त, प्रेम करने की थी

परवाह और किसको देना है हृदय .....

बेच डाला था हृदय अमोल ।"८

इस प्रकार अलका में अन्तर्द्वन्द्व देश प्रेम की भावना इसके साथ ही अपने पिता गांधार--नरेश और भाई के होने के कारण और सिंहरण के प्रति प्रेम भावना का प्रस्फुटित ने हो ना ही उसके मुख्य अंतर्द्वंद्व हैं । कार्नेलिया ऐतिहासिक चन्द्रगुप्त की नायिका है। शान्तिप्रिय ,भावुक, भारत के प्रति प्रेम भावना तथा प्रणय- भाव वाली कार्नेलिया सिल्यूकस की पुत्री है है। भारत भूमि के प्रति उसका गहन लगाव है। भारत के श्यामल कुंज, जंगल, सरिताओं की माला पहने। हुए शैल-श्रेणी, भोले कृषक तथा कृषक-बालिकाओं की सुनी हुई कहानियों जैसे स्वप्नों का देश देखकर उसका उन्मुक्त मन गीत गाने को उद्धत होता है:-

"अरुण यह मधुमय देश हमारा

जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को

मिलता एक सहारा

सरस तामरस गर्म विभा पर.....

जग कर रजनी भर तारा।"९

कार्नेलिया शान्ति प्रिय है। युद्धों से उसे घृणा है। उसे मन में ऐसे भारतवर्ष को देखकर अन्तर्द्वन्द्व होता है कि जो इतना पवित्र एवं प्रकृतिपूर्ण है। उस देश में युद्धों के बादल मंडराए रहते हैं यहाँ तक कि ग्रीक सम्राट सिकन्दर युद्ध करने के लिए तैयार है:-

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 3, March 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0603005 |

" वही निर्मल ज्योति का देश, पवित्र भूमि, अब हत्या और लूट से वीभत्स बनाई जाएगी-ग्रीक सैनिक इस शस्यश्यामला पृथ्वी को रक्तरंजित बनायेंगे। पिता अपने साम्राज्य से सन्तुष्ट नहीं, आशा उन्हें दौड़ावेगी। पिशाची को छलना पड़कर लाखों प्राणियों का नाश होगा और सुना है यह युद्ध होगा चन्द्रगुप्त से।"१०

कार्नेलिया आरम्भ से ही चन्द्रगुप्त के प्रति आकृष्ट है। दाण्ड्यायन के मुख से चन्द्रगुप्त के भावी सम्राट होने की भविष्यवाणी का प्रभाव तो कार्नेलिया पर पड़ा ही साथ ही चन्द्रगुप्त द्वारा ग्रीक–शिविर में रहने और फिलिप्स के अशिष्ट आचरण से उसकी रक्षा आदि घटनाओं ने चन्द्रगुप्त के प्रति उसके मन में एक अदम्य प्रणय भाव को उत्पन्न कर दिया। जिसे वह एकान्त में स्वीकार करते हुए कहती है :-

"एक घटना हो गई, फिलिप्स ने विनती की उसे भूल जाने की, उस घटना से और भी किसी का सम्बन्ध है, उसे कैसे मूल जाऊँ। उन दोनों में श्रृंगार और रौद्र का संगम है वह भी आह, कितना आकर्षक है! कितना तरंग संकुल है। इसी चन्द्रगुप्त के लिये न उस साधु ने भविष्यवाणी की है-भारत- सम्राट होने की। उसमें कितनी विनयशील वीरता है।"११

वह चन्द्रगुप्त से प्रेम तो करती है लेकिन उसके मन में अन्तर्द्वन्द्व इस बात का है कि वह दूर देश की है तथा उसका पिता सिल्यूकस चन्द्रगुप्त के विरोधी राजा का सेनापति है। दोबारा भारत लौटने पर भी अपनी प्रणय-स्मृतियों को इतने धीरे से जगाती है कि उसकी आहट बाहर किसी की सुनाई नहीं देती। सुवासिनी को सम्बोधित करके वह कहती है:-

"सखी ! मदिरा की प्याली तुम स्वप्न -सी लहरों को मत आन्दोलित कर । स्मृति बड़ी निष्ठुर है। यदि प्रेम ही जीवन का सत्य है, तो संसार ज्वालामुखी है ।"१२

कार्नेलिया की महानता इसी में है कि वह इस ज्वालामुखी को हृदय में छुपा कर शान्त और अविचल है। यद्यपि वह चन्द्रगुप्त के साथ सिल्यूकस के युद्ध और किसी अशुभ घटना की सम्भावना से चिंतित है इसलिए वह अपने पिता सिल्यूकस से पूछती है

"उसी चन्द्रगुप्त से युद्ध होगा. जिसके लिए उस साधु ने भविष्यवाणी की थी? वही तो भारत का राजा हुआ न ? "१३

वह अपने पिता को ध्यान दिलाती है कि उसी चन्द्रगुप्त ने आपकी कन्या के सम्मान की फिलिप्स से रक्षा की थी और अन्त में युद्ध की अनिवार्यता के निश्चय को सुनकर वह एक लम्बी आह लेकर रह जाती है। जहाँ प्रिय की कल्याण- भावना का भाव निहित है। वहाँ युद्ध को रोक पाने को अप्रत्यक्ष चेष्टा और प्रणय-सम्बंधी आकुलता का अन्तर्द्वन्द्व उसके मन कचोट रहा है :-

" मैं स्वयं पराजित हूँ। मैंने अपराध किया है पिता जी ! चलिये इस भारत की सीमा से दूर ले चलिए, नहीं तो मैं पागल हो जाऊँगी।"१४

मालविका सिन्धु देश की राजकुमारी है। वह चन्द्रगुप्त से प्रेम करती रही पर उसने किसी कार्य से चंद्रगुप्त को यह आभास नहीं होने दिया कि उसे कोई चाहता है। वह अपने हृदय की भावनाओं को सदा अपने में ही समेटे रही और अपने प्रेमी के लिए उसने अपना जीवन तक उत्सर्ग कर दिया। जब भी चन्द्रगुप्त गीत सुनाने का अनुरोध करता तो मालविका गद्गद् होकर गीत सुनाने के कार्य को अपना सौभाग्य समझती अनुकूल अवसर पाकर भी वह अपने को संयत रखने का प्रयत्न करती रही। चतुर्थ अंक के चतुर्थ दृश्य में चन्द्रगुप्त मालविका से कहता है-

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 3, March 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0603005 |

कोई मेरा अन्तरंग नहीं, तुम भी मुझे सम्राट कह कर पुकारती हो। इस प्रकार जीवन का सरस संकेत करता है। मालव के उपवन की, वहाँ अतिथि के रूप में रहने के दिनों की याद भी दिलाता है। पर वहाँ भी हम देखते हैं कि मालविका अपनी प्रणय आकांक्षा को उभारने नहीं देती और कर्तव्य की ओर संकेत करते हुए कहती है:-

"आप महापुरुष है, साधारणजन - सुलभ दुर्बलता न होनी चाहिये आप में देव ।।

बहुत दिनों पर मैने एक माला बनाई है..... मन का निग्रह करना ही महापुरुषों का स्वभाव है।"१५

इस प्रकार मालविका के समक्ष प्रेम भावना से अधिक अपने देश के प्रति कर्तव्य का भाव है और उससे भी अधिक चन्द्रगुप्त से प्रेम कर्तव्य और प्रेम का अन्तर्द्वन्द्व मालविका के भीतर फूट-फूट कर भरा पड़ा है ,जो सभी पात्रों से ऊँचा स्थान देता है।

निष्कर्ष:

अंत में हम कह सकते हैं कि नारी पात्रों में अंतर्द्वद्व मुख्यतः कल्याणी, सुवासिनी, अलका, कार्नेलिया एवं मालविका में विभिन्न कारणों एवं घटनाओं को लेकर होता है। अलका, कार्नेलिया एवं मालविका में अन्तर्द्वन्द्व चन्द्रगुप्त के प्रति आकर्षण एवं प्रेम भावना को लेकर है। कल्याणी में सिंहरण के प्रति प्रेम भावना की अभिव्यक्ति एवं सुवासिनी में राक्षस को लेकर अन्तर्द्वन्द्व विद्यमान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

१. जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली, (चंद्रगुप्त), अंक ४ पृष्ठ संख्या ७०८
२. जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली, (चंद्रगुप्त), अंक ४ पृष्ठ संख्या ७०६
३. जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली, (चंद्रगुप्त), अंक ५ पृष्ठ संख्या ७०९
४. जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली, (चंद्रगुप्त), अंक १पृष्ठ संख्या ६३१
५. जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली, (चंद्रगुप्त), अंक १पृष्ठ संख्या ६४८
६. जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली, (चंद्रगुप्त), अंक ४ पृष्ठ संख्या ७२०
७. जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली, (चंद्रगुप्त), अंक २ पृष्ठ संख्या ६७०
८. जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली, (चंद्रगुप्त), अंक २ पृष्ठ संख्या ६०२
९. जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली, (चंद्रगुप्त), अंक २:पृष्ठ संख्या ६५४
१०. जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली, (चंद्रगुप्त), अंक ४ पृष्ठ संख्या ७२३
११. जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली, (चंद्रगुप्त), अंक २ पृष्ठ संख्या ६५५
१२. जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली, (चंद्रगुप्त), अंक ४ पृष्ठ संख्या ७२८
१३. जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली, (चंद्रगुप्त), अंक ४ पृष्ठ संख्या ७२९
१४. जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली, (चंद्रगुप्त), अंक ४ पृष्ठ संख्या ७३५
१५. जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली, (चंद्रगुप्त), अंक ४ पृष्ठ संख्या ७१३

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor
7.54

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com